International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 4, Issue 11, November 2017
Website- www.aarf.asia, **Email** : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

आधुनिक युवापीढ़ी का वृद्धजनों के प्रति मनोवृत्ति एवं व्यवहार का अध्ययन

अशोक कुमार
शोधार्थी, शिक्षा-विभाग,
एच.पी.यू. शिमला

प्रस्तावना :

यदि देखा जाए तो सामाजिक आर्थिक कारण ही समस्त मूल्यगत परिवर्तनों के मूल हैं, तो अत्युक्ति नहीं होगी । किसी भी समाज को परिदृश्य मुख्यत: आर्थिक कारणों से ही निर्धारित होता है । धर्म और अर्थव्यवस्था आज वह धुरी बन गई है, जिसके द्वारा समाज के नीति, व्यवहार सम्बन्ध रिश्ते नाते सभी कुछ निर्धारित होते हैं । मनुष्य की दृष्टि अर्थोन्मुखी और अर्थ केन्द्रित हो जाने का ही परिणाम है कि संयुक्त परिवारों का विघटन होकर परिवार की छोटी-छोटी इकाईयां अस्तित्व में आई । संयुक्त परिवारों के विघटित हो जाने का सीधा असर आत्मीय रिश्तों- सम्बन्धों पर पड़ा है । मां-बाप, भाई-बहन, चाचा-भतीजे, बुआ आदि के रिश्ते अब देखने को नहीं मिलते । इन सब आत्मीय सम्बन्धों के बीच धन रूपी सांप कुण्डली मारकर बैठ गया है । रोजी-रोटी की तलाश में घर से बाहर दूर-दराज के नगरों में बसे व्यक्ति इन सम्बन्धों को जीते नहीं निभाते हैं ।

यह अर्थ प्रधान दृष्टि पति-पत्नी के सम्बन्धों के बीच भी घर करती जा रही है । विवाह को जन्म-जन्मांतर का आत्मीय सम्बन्ध और संदर्भ मानने के स्थान पर जीने का अर्थिक समझौता और सामाजिक सुरक्षा का साधन भर मानने की दृष्टि उच्चवर्गीय समाज में अधिक पनपती जा रही है । समाज के बीच व्यक्ति का यह बदला हुआ सम्बन्ध और संदर्भ प्रेम, सद्भावना, त्याग बलिदान आदि के मूल्यों को समाप्त कर रहा है । आज लगभग सम्बन्ध अर्थाश्रित हो गए हैं ।

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

अध्ययन की आवश्यकता :

आधुनिकीकरण के परिणामस्वरूप भारतीय समाज में भी मूल्य दृष्टि परिवर्तित हो रही है । इस परिवर्तित मूल्य दृष्टि का प्रभाव आज समाज में साफ देखा जा सकता है । भारतीय समाज के पुराने रीति-रिवाज, नीति, व्यवहार, रिश्ते-नाते सब बदल गये है । आधुनिकीकरण की वजह से संयुक्त परिवारों का बिखराव हो गया है । तथा परिवार की छोटी-छोटी इकाईयां अस्तित्व में आई । संयुक्त परिवारों के बिखराव की सबसे बुरी मार वृद्धों पर पड़ी है । आधुनिकीकरण और अधिक उदारीकरण ने जहां वृद्धों के लिए समय पूर्व ही कार्य क्षेत्र से सेवानिवृति की परिस्थितियां पैदा कर दी है, तो संयुक्त परिवारों के बिखराव ने उन्हें अपने घर ही चारदीवारी में नितांत अकेला कर दिया है।

जिन बच्चों को ये वृद्धावस्था की आस लगाये पढ़ा-लिखा कर उनके पैरों पर खड़ा करते हैं । वे ही शादी और रोजगार के बाद अपनी अलग दुनिया बसा लेते हैं । जिनकी बदौलत वे वहां पंहुच पाते हैं, उनको ही वे भूल जाते हैं । आज समाज में वृद्धों की उपेक्षा लगातार बढ़ रही है । वृद्धाश्रमों की बढ़ती हुई संख्या तथा वृद्धों की उपेक्षा में हो रही वृद्धि के कारण इस अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्ता बढ़ जाती है।

समस्या का कथन :

प्रस्तुत शोध समस्या का शीर्षक है ।

"आधुनिक युवापीढ़ी का वृद्धजनों के प्रति मनोवृत्ति एवं व्यवहार का अध्ययन"

अध्ययन के उद्देश्य :

1. युवाओं की अनेक वृद्धजनों के प्रति मनोवृत्ति का अध्ययन करना।
2. युवाओं का उनके वृद्धजनों के प्रति व्यवहार का अध्ययन करना।

परिकल्पना :

1. आज का युवावर्ग वृद्धजनों के प्रति उदासीन है ।
2. वृद्धजन युवावर्ग की उपेक्षा का शिकार है ।
3. आधुनिक युवावर्ग की वृद्धजनों के प्रति मनोवृत्ति एवं व्यवहार में कोई विशेष अन्तर नहीं है ।

अध्ययन की परिसीमाएं :

1. समय के अभाव के कारण प्रस्तुत शोध जिला कुरुक्षेत्र तक सीमित रखा गया है।
2. युवाओं की मनोवृत्ति एवं व्यवहार तक सीमित रखा गया है ।
3. युवाओं की मनोवृत्ति एवं व्यवहार को जानने के लिए शोधार्थी द्वारा स्वयं निर्मित प्रश्नावली एवं साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया है।

ज्नसंख्या एवं न्यादर्श :

शोधार्थी ने न्यादर्श के लिए सरल सम सम्भाविक प्रतिचयन विधि का प्रयोग किया है । न्यादर्श में 50 छात्र और 50 छात्राएँ कुरुक्षेत्र शहर से लिए गए हैं ।

उपकरण :

शोधार्थी द्वारा युवाओं से प्रदत्त एकत्रित करने के लिए प्रश्नावली एवं साक्षात्कार विधि का उपयोग किया गया है।

प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए विधि :

शोधार्थी द्वारा प्रदत्तों का विश्लेषण करने के लिए प्रतिशत विधि का प्रयोग किया गया । सर्वप्रथम शोधार्थी ने प्रत्येक प्रश्न का हां या नहीं के आधार पर प्रतिशत ज्ञात किया और फिर इसकी व्याख्या की गई ।

प्रदत्तो का विश्लेषण एवं व्याख्या :

1. क्या आप अपने बुजुर्गों का सम्मान करते हैं।

तालिका–1

हां :	नहीं :	कुल :
100	0	100

व्याख्या : तालिका के अनुसार 100 प्रतिशत युवाओं ने कहा कि हम अपने बुजुर्गो का सम्मान करते हैं ।

2. क्या आपके बुजुर्ग आपका आदर्श ।

तालिका-2

हां :	नहीं :	कुल :
87	13	100

व्याख्या : 87 प्रतिशत युवाओं ने बताया कि उनके बुजुर्ग उनका आदर्श हैं तथा 13 प्रतिशत युवाओं ने बताया कि उनके बुजुर्ग उनका आदर्श नहीं है

3. क्या आप अपने मित्रों का चुनाव करते समय माता-पिता की सलाह लेते हैं ।

तालिका-3

हां :	नहीं :	कुल :
40	60	100

व्याख्या: 40 प्रतिशत युवाओं ने बताया कि मित्रों के चुनाव में वे माता-पिता की सलाह लेते हैं तथा प्रतिशत 60 युवाओं ने बताया कि वे मित्रों के चुनाव मे माता-पिता की सलाह नहीं लेते हैं ।

4. क्या माता-पिता को अपनी संतान के बड़े हो जाने पर उनके मामले में अधिक दखल नहीं देना चाहिए ।

तालिका-4

हां :	नहीं :	कुल :
70	30	100

व्याख्याः 70 प्रतिशत युवाओं ने बताया कि उनके मामलों में दखला देना चाहिए तथा 30 प्रतिशत युवाओं ने बताया कि उनके मामलों में दखल नहीं देना चाहिए।

5. क्या आप शादी के बाद माता-पिता के साथ रहना पंसद करोगे ।

तालिका-5

हां :	नहीं :	कुल :
60	40	100

व्याख्या : 60 प्रतिशत युवाओं ने बताया कि शादी के बाद वे माता-पिता के साथ रहना पसन्द करेगें तथा 40 प्रतिशत युवाओं ने बताया कि वो शादी के बाद माता-पिता के साथ रहना पसन्द नहीं करेगें ।

6. यदि बुजुर्ग अपनी ही वजह से परेशान हैं तो क्या आप उनकी पेरशानी दूर करने में मदद करेगें ।

तालिका-6

हां :	नहीं :	कुल :
83	17	100

व्याख्या : 83 प्रतिशत युवाओं का मानना है कि वो उनकी मदद करेंगे तथा 17 प्रतिशत युवाओं का मानना है कि वो उनकी मदद नहीं करेंगे

मुख्य निष्कर्ष :

युवाओं से एकत्रित किये गये प्रदत्तों से पता चलता है कि सभी युवा अपने वृद्धजनों का सम्मान करते हैं तथा उनके दु:ख से दु:खी होते हैं और कोई भी युवा अपने वृद्धजन को वृद्धाश्रम में भेजने का इच्छुक नहीं है ।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि युवाओं की मनोवृत्ति एवं व्यवहार में अन्तर है । जबकि कहने के लिए सभी युवा अपने आपको आदर्शवादी दिखाते हैं, लेकिन व्यावहारिकता में सभी उच्च दिखाई नहीं पड़ते हैं।

शैक्षिक निहतार्थ :

प्रस्तुत अध्ययन कुरुक्षेत्र जिले के युवाओं की मनोवृत्ति एवं व्यवहार को जानने के लिए किया गया है । आज के समय में वृद्धों की समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है । यह समस्या आधुनिक युवावर्ग का वृद्धजनों के प्रति उदासीनता के कारण हो रही है तथा वृद्धजन युवावर्ग की उपेक्षा का शिकार हो रहे हैं । यह देखकर कि आज के समय में हमारे वृद्धजन जिनकी बदौलत हम आज यहां तक पंहुचे हैं उनकी समस्याओं का समाधान अति आवश्यक हो जाता है ।

प्रस्तुत शोध कार्य आज के युवाओं माता-पिता तथा अध्यापकों के लिए विशेष महत्व रखता है । माता-पिता बच्चों को ऐसे संस्कार तथा वातावरण दें कि आगे चलकर वे अपने वृद्धजनों तथा माता-पिता के प्रति उदासीन न हों । माता-पिता उनकी जरूरतों को समझें तथा उनकी जिन्दगी में आने वाली कठिनाईयां को दूर करने में मदद करें और उनके सामर्थ्य के अनुरूप आशा करें । लड़कों और लड़कियों को एक समान शान्तिपूर्ण एवं उनकी रुचियों के अनुसार कार्य करने दें ।

- REFERENCES

- Aggarwal, Y.P. (1986), Statistical method – concepts application and computation, New Delhi; sterling publication.
- Verma Anil (1998), News paper, Dainik Tribune, 5 Nov.
- Bajpai, P.K. (1997), Social work Perspectives on Health. Jaipur; Rawat Publication.
- Editor 10 Jan. (1999). The Tribune.
- Hasan Saiyad Zafar, Ageing in India, Minerva Association (Pub.) Pvt. Ltd. Lake Place Calcutta – 700029,
- Hazara Singh 2 Feb. 1999, Newspaper, The Tribune.
- Sudha Katyal 2004, Kumar Vijay 2001, Magzine, Social Welfare Vaisary
- Mukharji, Subha (30 Jan. 1990), Newspaper, Dainik Tribune.
- Nimkoff (1982), Changing Family Relationship of order of people in the united state during the fast fifty years, New York.
- Reddy, P.Jayarami (1986), Inter-Generational Suppor : A Reality on Myth.
- Upadhyay, R.K. (1999), A Study of the problem of the aged and need for social intervention in the states of Haryana & Himachal Pardesh.
- Urrashi 23 Jan. 2004, Newspaper, Dainik Tribune.
- Nisha Jain 3 Feb. 2004, Newspaper, Punjab Kesari.